उपसंहार

मैं ये पंक्तियाँ परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में लिख रहा हूँ, जो कि पवित्र गंगा के तट पर स्थित एक आदर्श आश्रम है, जिसके पीछे विशाल हिमालय दुर्ग के समान खड़ा है। इसका संचालन पूज्य स्वामी चिदानंदजी सरस्वती द्वारा किया जाता है, जिनके द्वारा हिंदू धर्म के नवजागरण और सुधार के लिए किए गए कार्यों की मैं अत्यंत प्रशंसा करता हूँ। मैं इस स्थान पर एक वर्ष पूर्व वर्ष 2007 में उषाकाल का अनुभव प्राप्त करने के लिए आया था। मैं एक बार फिर अपने परिवार के साथ इस आध्यात्मिक स्थान पर कुछ दिन व्यतीत करने आया हूँ। हवा शुद्ध है और वातावरण अत्यंत मनोहारी है। पर मुझे जिस चीज ने सर्वाधिक आकर्षित किया है, वह है स्वामीजी द्वारा स्थापित गुरुकुल। इसमें अनाथ और त्याग दिए गए बच्चों को ऋषिकुमार बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है। वे परंपरागत एवं आधुनिक दोनों प्रकार की शिक्षा ग्रहण करते हैं, जिससे हर बच्चे को अपनी स्वाभाविक एवं बौद्धिक रचनात्मकता को विकसित करने में मदद मिलती है। शाम को स्वामीजी और इन नन्हे देवदूतों के साथ आरती में भाग लेते हुए जब मेरे सामने पवित्र गंगा बह रही है और आकाश पौष्य पूर्णिमा के चंद्रमा से आलोकित है तो इसका मेरे मन पर बहुत पवित्र प्रभाव पड़ रहा है।

स्वामीजी ने मेरे साथ अपने आश्रम में चल रही और कई भावी परियोजनाओं पर चर्चा की। इनमें गंगा को साफ करना, उत्तराखंड—जिसे 'देवभूमि' माना जाता है, को प्लास्टिक और अन्य कूड़ा-करकट से मुक्त करना तथा राज्य के तीर्थस्थलों का सौंदर्यीकरण एवं पुनर्सज्जा करना। इस विचार ने मुझे बहुत प्रभावित किया क्योंकि हरिद्वार, ऋषिकेश, मथुरा, वाराणसी और भारत के कई अन्य पवित्र स्थलों की स्थिति काफी बुरी है, जहाँ प्रतिवर्ष पूरे भारत से लाखों श्रद्धालु आते हैं। ये मुझे हमेशा निराशा से भर देते हैं। सौभाग्य से उत्तराखंड के मुख्यमंत्री मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) बी.सी. खंडूरी ने भी हमारे साथ इस परिचर्चा में भाग लिया और यह निर्णय लिया कि सरकार, सामाजिक संगठन एवं धार्मिक प्रतिष्ठान एक साथ मिलकर इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए एक व्यापक और समयबद्ध अभियान चलाएँगे। इसे सर्वप्रथम गंगा के उद्‍गम स्थल गंगोत्री से आरंभ किया जाएगा। तदुपरांत यमुनोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ, उत्तरकाशी, हेमकुंट, ऋषिकेश और हरिद्वार में कार्यान्वित किया जाएगा।

मैं इस परियोजना के आरंभ होने के प्रति दो कारणों से आश्वस्त था। पहला कि खंडूरी कर्मठ व्यक्ति हैं और वाजपेयी सरकार में भूतल एवं परिवहन मंत्री के रूप में उन्हें महत्त्वाकांक्षी राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना को लागू करने के लिए राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि मिली। दूसरे, उत्तराखंड और पूरे भारत में दूरदृष्टि रखनेवाले ऐसे कई धार्मिक नेता हैं, जो 'निर्मल गंगा' के स्वप्न को यथार्थ में बदलने के लिए योगदान करने की इच्छा रखते हैं।

यह मेरा सपना है कि गंगा को प्रदूषण से मुक्त देख सकूँ—गंगोत्री से गंगासागर तक, पश्चिम बंगाल का वह स्थान, जहाँ वह सागर में मिलती है। इस उद्देश्य से पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1980 के दशक में 'गंगा एक्शन प्लान' के नाम से एक सराहनीय परियोजना आरंभ की थी। दुर्भाग्य से उसके वांछित परिणाम नहीं निकल सके, क्योंकि उसे नौकरशाही के तरीके से लागू किया गया था और उसमें उन लोगों का उत्साह सम्मिलित नहीं था, जिसे मैं गंगा परिवार—गंगा के दोनों ओर रहनेवाले लोग एवं देश के विभिन्न भागों से आनेवाले तीर्थयात्री और सबसे महत्त्वपूर्ण गंगा के साथ-साथ स्थापित सैकड़ों धार्मिक प्रतिष्ठान—कहता हूँ। मुझे कोई संदेह नहीं है कि यदि समाज और राज्य द्वारा संयुक्त रूप से दृढ़ व सतत प्रयास किया जाए तो पवित्र गंगा को उसकी प्राचीन शुद्धता प्रदान की जा सकती है। हालाँकि इस लक्ष्य को पूरी तरह से प्राप्त करने में वर्षों लग सकते हैं, लेकिन यह महायज्ञ करना उपयोगी होगा। वास्तव में हमारा दीर्घकालिक लक्ष्य होना चाहिए भारत की सभी नदियों, झीलों और जल निकायों को प्रदूषण-मुक्त किया जाए; क्योंकि वे केवल हमारे देश के विकास की जीवन-रेखा ही नहीं हैं, बल्कि भारत की प्राचीन एवं गौरवपूर्ण सभ्यता के संकेत और अवशेष भी हैं।

यह उद्यम इस बात से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है कि किस तरह धर्म हमारी राजनीति को और अधिक अर्थपूर्ण एवं परिवर्तनकारी बना सकता है, जिसकी चर्चा मैंने पिछले अध्याय में की है। गंगा को साफ करने के विचार ने अपरिहार्य रूप से मुझे इस बात पर विचार करने पर मजबूर कर दिया कि कैसे प्रदूषण हमारी राजनीति, शासन और भारत में सार्वजनिक जीवन को प्रभावित कर रहा है और कैसे एक अध्यात्म-प्रेरित उच्च आदर्श का पालन कर हम इससे मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इस अपेक्षा की वाणी गंगा आरती की समाप्ति से कुछ पहले मिली। स्वामीजी ने मुझसे श्रद्धालुओं को संबोधित करने को कहा, जो नदी के किनारे उस सुंदर धार पर एकत्र हुए थे, जिसका निर्माण स्वामीजी ने कराया था। मेरी त्वरित टिप्पणियाँ थीं—

> 'मैं स्वयं को श्रद्धालुओं की सभा को संबोधित करने के योग्य नहीं मानता हूँ, क्योंकि मैं भी आप लोगों की तरह ही एक श्रद्धालु और ज्ञान-प्राप्ति की चाह रखनेवाला हूँ। यहाँ मैं कुछ ज्ञान और प्रेरणा पाने आया हूँ, न कि देने आया हूँ। फिर भी, बात यह है कि मैं राजनीति और राष्ट्र-निर्माण की गतिविधियों में आध्यात्मिक मार्गदर्शन के महत्त्व पर कुछ विचार बाँटूँ, तो मेरे पास इस विषय पर कहने के लिए कुछ है।
>
> जब मैं सार्वजनिक जीवन में गुजारे छह दशकों को पीछे मुड़कर देखता हूँ—और यह अवधि भारत की स्वतंत्रता के साठ वर्षों के एकदम साथ-साथ चल रही है—इसमें मैं तीन मुख्य उपलब्धियों को देख सकता हूँ,—जिन्होंने हमारे राष्ट्र की शक्ति व सामर्थ्य को बढ़ाकर

अंतरराष्ट्रीय मंच पर इसके कद को ऊँचा किया है। पहला, भारत ने न केवल शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया बल्कि उत्साह के साथ इसे संरक्षित भी रखा और कुछ विदेशियों की उस निराशावादी भविष्यवाणी को झुठला दिया कि एक ऐसा देश, जिसकी काफी बड़ी जनसंख्या निरक्षर है और जिसे अनेक विभाजनकारी विविधताओं ने जकड़ा हुआ है, वह न तो लोकतांत्रिक रह सकता है और न ही एकजुट। भारत मुख्य रूप से अपने हिंदू लोकाचारों के कारण लोकतांत्रिक रह सका, जिस तरह से यह हिंदू लोकाचारों के कारण ही पंथनिरपेक्ष बना हुआ है। हमारी दूसरी सबसे बड़ी उपलब्धि है कि भारत अब एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र है। मई 1998 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लिये गए साहसी निर्णय के कारण ही यह संभव हो पाया। विडंबना है कि कुछ देशों, जिनके पास हमसे अधिक घातक परमाणु हथियार हैं, ने इस निर्णय के लिए हमारी सरकार की आलोचना की। फिर भी, इसने हर भारतीय को गौरवान्वित किया और उसे आश्वस्त किया कि भविष्य में कोई भी बुरी ताकत हम पर हमला करने की और सैन्य दृष्टि से भारत को अपना गुलाम बनाने की हिम्मत नहीं कर सकेगी, जैसाकि पिछले एक हजार वर्षों में होता रहा है। हमारी तीसरी सबसे बड़ी उपलब्धि है—हाल में आर्थिक विकास के क्षेत्र में हुई असाधारण प्रगति। आज सारी दुनिया भारत को कल की आर्थिक महाशक्ति के रूप में देख रही है। इसके परिणामस्वरूप, भारत और भारतीयों को अंतरराष्ट्रीय समुदाय में वह सम्मान और महत्त्व प्राप्त हो रहा है, जो दो या तीन दशक पहले नहीं था।

एक भारतीय और एक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में ये तीन उपलब्धियाँ मुझे अत्यधिक प्रसन्नता और गौरव प्रदान करती हैं; विशेषकर इसलिए कि इनमें से हर किसी में मेरी पार्टी का योगदान रहा है। यह सत्य है कि सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में हमारे समक्ष कई अधूरे कार्य और अपूर्ण आकांक्षाएँ हैं। गरीबी और पिछड़ेपन को पूरी तरह से दूर किया जाना चाहिए। हर नागरिक को सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए और शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास, सुख-सुविधा एवं मनोरंजन के लिए निश्चित प्रावधान होना चाहिए, जिससे कि उसका जीवन उन्नत हो सके और वह एक मनुष्य के रूप में अपनी पूरी क्षमताओं को विकसित कर सके। जब मैं भविष्य की ओर देखता हूँ, मुझे कोई संदेह नहीं रहता कि देर-सबेर भारत की भौतिक प्रगति के ये सभी कार्य पूरे होंगे, यद्यपि हम चाहते हैं कि ऐसा जल्दी-से-जल्दी हो। लेकिन क्या भौतिक प्रगति और समृद्धि ही एकमात्र आदर्श है, जिसकी इच्छा भारत को करनी चाहिए? भारत को इससे कहीं ऊँचे आदर्शों के लिए प्रयास करना चाहिए। ये ऊँचे आदर्श क्या हैं? इन्हें कैसे समझा जा सकता है? इन्हें प्राप्त करने के लिए कौन हमें मार्गदर्शन दे सकता है?

मैं आमतौर पर अपनी राजनीतिक रैलियों में इसके बारे में बात नहीं करता हूँ। पर चूँकि मैं पवित्र गंगा के समक्ष हूँ, मैं यह कहने के लिए उद्यत हूँ कि यह आदर्श है भारत की आध्यात्मिक प्रगति का, जो उन कई समस्याओं का समाधान कर सकती है, जिनका सामना हमारा अपना देश और व्यापक रूप से मानवता कर रही है। इस विचार को भारत के सभी

महान् संतों और ऋषियों ने अभिव्यक्त किया है; लेकिन मैं यहाँ 15 अगस्त, 1947 को श्रीअरविंद द्वारा दिए गए सर्वाधिक प्रेरक उद्‍बोधन का उल्लेख करना चाहूँगा, जिन्हें आकाशवाणी ने भारत की स्वतंत्रता पर विशेष संदेश देने का अनुरोध किया था। 15 अगस्त को उनका जन्मदिन भी होता है। मेरा मानना है कि उनका छोटा सा संदेश, जिसमें हमारे देश के लिए कई साहसिक कथ्य थे और जो सदा प्रासंगिक रहेंगे, सार्वजनिक जीवन चुननेवाले हर भारतीय द्वारा पढ़ा जाना चाहिए।

15 अगस्त, 1947 स्वाधीन भारत का जन्मदिन है। यह दिन भारत के लिए पुराने युग की समाप्ति और नए युग का प्रारंभ सूचित करता है। परंतु इसका महत्त्व हमारे लिए ही नहीं, बल्कि एशिया और संपूर्ण संसार के लिए भी है; क्योंकि यह राष्ट्रों की बिरादरी में एक नई शक्ति के प्रवेश का सूचक है, जिसमें अवर्णनीय संभावनाएँ हैं, परंतु हम एक स्वाधीन राष्ट्र के रूप में अपने जीवन और कार्यों के द्वारा इसे ऐसा महत्त्वपूर्ण दिन भी बना सकते हैं, जो संपूर्ण जगत् के लिए, सारी मानव जाति के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भविष्य के लिए नवयुग लानेवाला सिद्ध हो। भारत का विश्व को आध्यात्मिक उपहार देना शुरू हो चुका है। भारत की आध्यात्मिकता की स्वीकार्यता यूरोप और अमेरिका में निरंतर बढ़ रही है…। विनाशकारी समय के बीच अधिक-से-अधिक आँखें उसे आशा भरी निगाहों से देख रही हैं।

फिर भी, योगी की अंतर्दृष्टि ने भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में बहुत अधिक क्षमता-संपन्न देखा। एक द्रष्टा के रूप में, जो मानते थे कि मानव-मन की नियति अंततः एक सुपर मन बनना ही है, जिसमें असीमित नई संभावनाएँ हैं, जो वर्तमान में मनुष्य के अल्प विकसित चरण के साथ पूरी नहीं हो सकतीं। उन्होंने 15 अगस्त का वर्णन विकास के एक चरण के रूप में किया, जो मनुष्य को उच्च एवं व्यापक चेतना तक ले जाएगा और उन समस्याओं को दूर करेगा, जिनसे कि वह घिरा हुआ है; चूँकि वह व्यक्तिगत उत्कृष्टता और एक उत्कृष्ट समाज के बारे में सोचने तथा सपने देखने लगा है। यह अभी भी एक व्यक्तिगत आशा और विचार है, एक आदर्श है जिसने भारत और पश्चिमी देशों, दोनों पर भविष्य की सोच रखनेवाले मन को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। यहाँ भी यदि यह विकास करना है तो इसकी जीवनी-शक्ति और आंतरिक चेतना की प्रगति से ही संभव होगा—और इसका सूत्रपात भारत कर सकता है, यद्यपि इसका कार्यक्षेत्र सार्वभौमिक होगा, पर केंद्रीय आंदोलन भारत का होगा।

श्रीअरविंद ने इस तथ्य का उल्लेख किया कि '15 अगस्त मेरा अपना जन्मदिन है और स्वभावतः ही यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है कि इस दिन ने इतना विशाल अर्थ तथा महत्त्व प्राप्त कर लिया है। परंतु इसके भारतीय स्वाधीनता-दिवस भी हो जाने को मैं कोई आकस्मिक संयोग नहीं मानता, बल्कि यह मनता हूँ कि जिस कर्म को लेकर मैंने अपना जीवन आरंभ किया था, उसको मेरा पथ-प्रदर्शन करनेवाली भागवती शक्ति ने इस तरह मंजूर कर लिया है और उस पर अपनी मुहर भी लगा दी है तथा वह कार्य पूर्ण रूप से सफल होना

आरंभ हो गया है। निस्संदेह, आज के दिन मैं प्राय: उन सभी जागतिक आंदोलनों को—जिन्हें मैंने अपने जीवनकाल में ही सफल देखने की आशा की थी, यद्यपि उस समय वे असंभव स्वप्न जैसे ही दिखाई देते थे—सफल होते हुए या अपनी सफलता के मार्ग पर जाते हुए देख सकता हूँ। इन सभी आंदोलनों में स्वाधीन भारत एक बड़ी भूमिका अच्छी तरह अदा कर सकता और एक प्रमुख स्थान ग्रहण कर सकता है।' उन्होंने इस प्रेरक संदेश का समापन आशावाद से किया, 'ये हैं वे भाव और भावनाएँ, जिनको मैं भारतीय स्वाधीनता की इस तिथि के साथ संबद्ध करता हूँ। क्या ये आशाएँ ठीक सिद्ध होंगी या कहाँ तक सिद्ध होंगी, यह बात नए और स्वाधीन भारत पर निर्भर करती है।'*

मैंने श्रीअरविंद के संदेश का उल्लेख इसलिए किया, क्योंकि राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन से जुड़े हममें से प्रत्येक को भारत के मनीषियों द्वारा राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत उन महान् लक्ष्यों और बढ़ती आशाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए। हमें अपनी स्वयं की गतिविधियों, महत्त्वाकांक्षाओं और जीवन लक्ष्यों की तुलना राष्ट्र-निर्माण के उच्च लक्ष्य से करनी चाहिए। क्या हम स्वार्थ-पूर्ति के लिए स्वयं को नीचे गिरा रहे हैं या हम अपने साधारण व्यक्तिगत योगदान के माध्यम से अपने आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा दिखाए गए मार्ग पर भारत की मशाल को जलाए रखकर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ा रहे हैं?

स्वामीजी ने गंगा को प्रदूषण-मुक्त करने का बीड़ा उठाया है। मैं उनकी पीड़ा समझ सकता हूँ। हम कैसे कह सकते हैं कि हम गंगा माँ की पूजा करते हैं, पर उसके वातावरण और जल को प्रदूषित करते हैं? मुझे स्वयं कल ऋषिकेश आते हुए काफी निराशा हुई, जब सड़क के किनारे प्लास्टिक और कूड़े की टीले देखे। यह दृश्य बदला जाना चाहिए। पर केवल बाहरी वातावरण ही नहीं बल्कि हमारे अपने जीवन का आंतरिक वातावरण भी शुद्ध होना चाहिए। इसके बिना हम राष्ट्र-निर्माण के बड़े और चुनौतीपूर्ण कार्यों को पूरा नहीं कर पाएँगे और न ही हमारी सफलता चिरस्थायी होगी।

मेरा हमेशा यह मानना रहा है कि भारत में प्रगति की असीम संभावनाएँ हैं। हमारे पास मानवीय और प्राकृतिक दोनों संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके अलावा, हमारे पास मार्गदर्शन के लिए बहुमूल्य आध्यात्मिक शक्ति और परंपरागत मूल्यों की विरासत है। मैंने स्वामीजी से विचार-विमर्श किया कि हम अपने आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की शक्ति के प्रयोग, संसाधनों के समुचित उपयोग और अपनी विरासत के मार्गदर्शन से किस तरह एक स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, साक्षर भारत, शक्तिशाली भारत, समृद्ध भारत और प्रबुद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं।

वास्तव में राष्ट्र-निर्माण के लिए संपूर्ण समर्पण और निष्ठा की भावना दर्शाने की आवश्यकता

---

* भारत की स्वाधीनता की पूर्व-संध्या पर श्रीअरविंद का आकाशवाणी से प्रसारित संदेश का पूरा पाठ परिशिष्ट-I में दिया है।

है, जो हमारे पूर्वजों ने भारत को स्वतंत्र कराने में प्रदर्शित की थी। यहाँ मुझे स्वामी विवेकानंद के वे शब्द स्मरण आते हैं, जो उन्होंने वर्ष 1897 में—यूरोप और अमेरिका की सफल यात्रा के बाद, जिसके दौरान उन्होंने 1893 में शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में ऐतिहासिक भाषण दिया था—भारत लौटने पर कहे थे। स्वामीजी मद्रास आए, जहाँ उनका जोरदार स्वागत किया गया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कुछ भविष्यदर्शी शब्द कहे—

अगले पचास वर्षों के लिए''हमारे मन से सभी निष्फल देवताओं को निकल जाने दें। केवल एक ही देवता, भारत, हमारी अपनी प्रजाति, जाग्रत् है। अन्य सभी देवता सो रहे हैं। हम निष्फल देवताओं के पीछे जाकर क्या करेंगे? हम अपने आस-पास दिख रहे 'विराट्' को छोड़कर अन्य निष्फल देवताओं के पीछे क्यों भागें?'' क्या हम उस देवता की आराधना न करें, जो हमारे चारों ओर है—विराट् है। सर्वप्रथम हमें विराट्, जो कि हमारे चारों ओर है, की पूजा करनी चाहिए। मनुष्य और पशु—ये सभी हमारे देवता हैं और सबसे पहले हमें जिन देवताओं की पूजा करनी चाहिए, वे हैं हमारे अपने देशवासी।'

यह जानना रोचक होगा कि स्वामी विवेकानंद ने यह आह्वान सन् 1897 में अगले पचास वर्षों के लिए किया था। ठीक पचास वर्षों के बाद भारत ने औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। क्या हमें अभी भी उनके आह्वान पर ध्यान नहीं देना चाहिए? अंतर केवल इतना हो कि अब अपने विश्वास के अनुरूप अपने देवताओं की पूजा करने के साथ-साथ, हम सभी को इस विराट् भारत की पूजा भी करनी चाहिए। क्या हमें इसके सभी लोगों, पशुओं, नदियों, सागरों, वातावरण में दैवी स्वरूप नहीं दीखता? क्या हमें इनके गौरव और महानता के लिए काम नहीं करना चाहिए? क्या हमें श्रीअरविंद, स्वामी विवेकानंद और अन्य महापुरुषों की शिक्षाओं के अनुरूप भविष्य के भारत के निर्माण के अपने कार्य को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए? मेरा ऐसा मानना है। यह विश्वास तब और भी पक्का हो जाता है, जब मैं ऋषिकेश जैसे पवित्र तीर्थ पर आता हूँ।'

~•~

जब मैं ऋषिकेश आया, उसी दिन राजग ने मुझ पर विश्वासपूर्वक एक नया दायित्व सौंपा—अगले लोकसभा चुनाव में गठबंधन का नेतृत्व करने का दायित्व। मेरी पार्टी के संसदीय बोर्ड ने इसी तरह का निर्णय एक माह पूर्व लिया था। वास्तव में यह एक चुनौतीपूर्ण दायित्व है और मैं इसे सफलतापूर्वक निभाने का हरसंभव प्रयास करूँगा तथा इसके लिए मैं अपने सभी साथियों और देशवासियों का समर्थन व सहयोग चाहूँगा, और सबसे पहले मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा, शक्ति एवं आर्मिवाद पाना चाहूँगा। मेरा अनवरत प्रयास होगा कि राजग के चुनाव प्रचार का मुख्य केंद्रबिंदु सुशासन, देश और इसके नागरिकों, दोनों के लिए विकास एवं सुरक्षा; और यदि हमें जनादेश मिला तो यही हमारी सरकार के मुख्य उद्देश्य होंगे।

मेरा विश्वास है कि भारत बड़ी आशा से शासन में ईमानदारी और सुदृढ़ नेतृत्व की तलाश कर रहा है, जो कोई समझौता किए बिना देश की एकता, अखंडता, सुरक्षा एवं प्रगति के लिए समर्पित हो। हमारे देशवासी शासन—नई दिल्ली में सत्ता के केंद्रों पर की गंगोत्री पर प्रदूषण का अंत चाहते हैं—ताकि

शेष गंगा साफ और जीवनदायिनी बन सके। 'प्रदूषण' से मेरा तात्पर्य केवल वित्तीय भ्रष्टाचार और राजनीति व प्रशासन के दुरुपयोग से नहीं है। निस्संदेह भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय विकास के साथ धोखाधड़ी करता है, और हमारे देशवासी, जो हर स्तर पर इससे पीड़ित और प्रताड़ित होते हैं, इसका अंत देखना चाहते हैं। पर यह 'प्रदूषण' कई अन्य घातक रूपों में भी विद्यमान है—छद्म पंथनिरपेक्षवाद, अल्पसंख्यकवाद, वोट बैंक की राजनीति, अपराधीकरण, संस्थाओं का दुर्बलीकरण और हमारे राष्ट्रवाद के पवित्र प्रतीकों का अपमान; और यह सब भारत को कमजोर बनाता है तथा बड़े खतरों के प्रति संवेदनशील भी।

यह तथ्य भी कम चिंताजनक नहीं है कि आजादी के साठ वर्षों के बाद भी हमारी जनसंख्या के बहुसंख्य हिस्से को आर्थिक विकास का लाभ नहीं मिल पा रहा है, जबकि धनी और विशेषाधिकार प्राप्त एक छोटा वर्ग इसका पूरा-पूरा लाभ उठा रहा है। धनी और अधिक धनवान बनते जा रहे हैं तथा निर्धन निर्धन ही बने हुए हैं। लोग ऐसी सरकार चाहते हैं, जो अपने विविधतापूर्ण समाज में सबका समान रूप से ध्यान रखे, विशेषकर गरीब और वंचित वर्ग का। वे एक ऐसा नेतृत्व चाहते हैं, जो वास्तव में लोकतंत्र का सम्मान करे और स्वार्थी विचारों से प्रेरित हमलों से इसके संस्थानों की रक्षा करने के प्रति दृढ़-प्रतिज्ञ हो।

इनमें से हर आशा वैध है, और आवश्यक भी। भारत के उसी राजनीतिक वर्ग का भविष्य उज्ज्वल होगा, जो सुशासन, विकास और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध होकर लोगों की माँगों को ध्यान से सुने।

मेरे लंबे राजनीतिक जीवन में मुझे समय-समय पर जो भी छोटी या बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसे मैंने पूरी ईमानदारी, निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ निभाया है। सार्वजनिक जीवन में अर्जित विश्वसनीयता इसी का परिणाम है। भविष्य में भाग्य मुझे जो भी काम सौंपा जाएगा, उसे मैं पूर्ण सेवाभाव से करूँगा ताकि भारत अधिक संगठित, अधिक मजबूत और अधिक गौरवशाली बन सके तथा इसका भविष्य आज से अधिक उज्ज्वल बन सके।

—लालकृष्ण आडवाणी

परमार्थ निकेतन,